International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 293-296

भारतीय सामाजिक व्यवस्था और स्त्री

माया मधुर*

सार

हमारे समाज में कई तरह की असमानताएं हैं स्त्री और पुरुष के बीच की असमानता उसी में से एक है आमतौर पर पितृसत्ता शब्द का प्रयोग इसी असमानता को व्यक्त करने के लिए किया जाता है स्त्रियों की सृजनात्मकता शक्ति के संदर्भ में प्रसिद्ध विचारक अशोक पांडे लिखते हैं ''औरत ने कुदरत को संभाल कर रखने में अपनी हिस्सेदारी निभाई क्योंकि उसका जन्म ही सृजन के लिए हुआ था उसने युद्ध नहीं रचे। उसे इसकी फुर्सत ही नहीं थी तमाम तरह की विभीषिकाओं के बीच और उनके गुजर जाने के बाद भी उसने जीवन के बीज बोए। इसके लिए उसे कभी अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता नहीं रही। यह बात और है कि ना जाने कब से पि लाई जाती रही त्याग, ममता और श्रद्धा की छुट्टियों ने उसके अस्तित्व को इस कदर बांधा कि वह आज तक इन्हीं छवियों में मुक्ति तलाशती आ रही है।'' यह हमारे समाज की एक शर्मनाक स्थिति है की कभी स्त्री को दहेज के नाम पर जला दिया जाता है कभी पति की मृत्यु के बाद उससे सती हो जाने के लिए मजबूर किया जाता है कभी उसे भ्रुण में ही समाप्त कर दिया जाता है। यह समाज और उसकी सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में तथाकथित उनके रखवालों ने स्त्रियों को सदैव अपने नियंत्रण में रखने के प्रयास में उन पर सदियों से ऐसे नियमों और कानूनों को थोपा जिससे वह कभी अपने व्यक्ति त्व अपने अस्तित्व अपने कृतित्व के ताकत को पहचान ना पाए और उनकी सारी सृजनात्मक शक्ति घर की चारदीवारी में कैद होकर रह जाए। यह सामाजिक व्यवस्था जो बाहरी तौर पर सब कुछ सही और और सामान्य दिखाने का प्रयास करती है वास्तव में यह अपने भीतर अनेक पदों को समेटे हुए हैं तथा ध्यान से देखने पर उसकी प्रत्येक परत में हमें स्त्रियों के प्रति होने वाले अपराध, शोषण, हीनता, दमन और ना जाने क्या क्या देखने को मिलेगा। यदि हम विधिवत रूप से सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत स्त्रियों की स्थिति देखना चाहते हैं तो हमें अपना अध्ययन जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को अपने अधीन करने वाली जटिल संरचना से करना होगा और यह जटिल संरचना है पितृसत्ता या पुरुषवाद। यह परंपरागत संरचना विश्व के लगभग सभी समाजों में सभी देशों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है पुरुष के साथ रिश्ता तथा स्त्रियों के साथ हीनता की बात प्रकृति ने नहीं वरन समाज ने जोड़ी है।

शब्दकोशः *सामाजिक संरचना में स्त्रियों की स्थिति तथा भूमिका।*

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारियों को देवी का अवतार मानते हुए उनके पूजा अर्चना की बातें कही गई हैं किंतु ऐसा कहीं भी दिखाई नहीं देता है जहां उनकी सम्मान की ऐसी अवस्था आई है। किसी भी सभ्य समाज में स्त्रियों की दशा के आधार पर ही उस समाज की वर्तमान स्थिति को जाना जा सकता है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, एमजीपीजी गर्ल्स कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश।

समाज क्या है?

समाज को परिभाषित करते हुए मैकाइवर ने अपनी विश्व प्रसिद्ध वाक्य के रूप में यह बताया है कि ''समाज सामाजिक संबंधों का जाल है'' अर्थात समाज का निर्माण सिर्फ पुरुषों से ही नहीं अपितु महिलाओं से भी मिलकर बना हुआ है समाज में स्त्रियों का भी उतना ही महत्व है जितना कि पुरुषों का।

समाज के निर्माण में स्त्रियों की भूमि का उतनी ही महत्वपूर्ण है जि तनी कि मानव शरीर को जल वायु व भोजन की है। हमारे देश में महिलाओं की स्थिति सदियों से दयनीय रही है उनका प्रत्येक स्तर पर शोषण का अपमान होता रहा है पुरुष प्रधान समाज होने के कारण सभी नियम, कायदे व कानून पुरुषों के हितों को ध्यान में रखकर ही बनाए जाते रहे हैं। भारतीय समाज में कुल जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं का होने के कारण महिला व विकास का अंतरण संबंध है। कोई भी देश व समाज तब तक विकास नहीं कर सकता जब तक उसका आधा भाग शोषित अथवा अविकसित है। दूसरे शब्दों में महिलाओं की क्षमता का पूर्ण विकास किए बिना किसी भी सामाजिक राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था का विकास संभव नहीं है।

सामाजिक संरचना में स्त्रियां

स्त्रियों के उत्पीड़न और दासता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि सामाजिक संरचना के उद्‌भव और विकास का। प्राचीन काल से ही स्त्रियों को समानता की दृष्टि से देखा जाता रहा है और इस आधार पर उनका हर क्षेत्र में उत्पीड़न किया जाता रहा है फिर चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक या फिर सामाजिक क्षेत्र ही क्यों ना हो।

स्त्रियों को समानता की दृष्टि से देखते हुए पुरुष जाति ने उन्हें किसी भी क्षेत्र में अपनी बराबरी का स्थान नहीं दिया। आशा मानता और उत्पीड़न का यह दुष्चक्र समाज की प्रथम इकाई परिवार से ही प्रारंभ हो जाती है, ''लड़की जिस दिन घर में पैदा होती है, उसी दिन थालियां उलट दी जाती है चूल्हे की आग बुझा दी जाती है। चूल्हे की आग बुझा दी जाती है। दाई–दादी सब आंखें पूछती हैं और मां की आंखें छल छल आ जाती हैं–जैसे कि कोई पैदा ही ना हुआ हो।

किसी की मृत्यु का शोक मनाया जा रहा हूं जब लड़की का पैदा होना इतने शोक का कारण है तो उसे संपत्ति में हिस्सा कौन देगा और क्यों देगा? भाई भी बहन के लिए तब तक अच्छे बने रहेंगे जब तक कि वह संपत्ति में हिस्सा नहीं मांगती है। उत्तराधिकार उसे मिलता नहीं, संपत्ति में हिस्सा मांगते ही वह खलनायिका बन जाती है घर के दरवाजे हमेशा के लिए बंद।''

स्त्री हमारे देश की आधी आबादी का सच ही नहीं वरन वह हमारे समाज हमारी मिली–जुली संस्कृति और सभी प्रकार की सभ्यताओं की दूरी में आज भी अवस्थित है। प्राचीन काल में समाज में स्त्रियों की स्थिति को महिमामंडित किया गया तो मध्यकाल तक आकर उनकी स्थिति बदतर हो गई उत्थान और पतन की नियति प्रकृति और व्यक्ति के स्वकर्म द्वारा तय होती है। बाद के समय में इस्त्री पद के पतन की शुरुआत होने लगी इस स्थिति में न केवल संपूर्ण सामाजि क ढांचे को बल्कि समूची स्त्री जाति को ही एकाएक झिझोड़ कर रख दिया।

सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों की दशा

यह तो सर विदित है की सभ्यता की शुरुआत ही स्त्री की गुलामी से हुई मनुष्य जब जंगलों या पहाड़ों की गुफाओं में रहता था, तब एक आदिम तरह का समाजवाद था। परिवार का केंद्र स्त्री थी स्त्री के द्वारा ही संतान की पहचान थी स्त्री परि वार की मुखिया होती थी, अतः उसकी आज्ञा सबको माननी पड़ती थी। लेकिन जब मनुष्य के ज्ञान का विस्तार हुआ तब एक नए तरीके के समाज का निर्माण हुआ। जिसके केंद्र में अब संपत्ति आ गई इस संपत्ति पर पुरुषों का कब्जा हो गया क्योंकि वह स्त्री की जैविक सीमाओं से मुक्त था और शारीरिक बल में भी वह उससे श्रेष्ठ था। ''जिसकी लाठी, उसकी भैंस'' का यह सिलसिला एक बार शुरू हो गया तो फिर इसने रुकने का नाम नहीं लिया।

वहीं दूसरी तरफ पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था ने परि वार और समाज के सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की जिम्मेदारी मुख्य रूप से स्त्री को ही सौंप रखा है स्त्री घर की इज्जत भी और इज्जत बनाए रखने वाली भी है। यही कारण है कि कभी वह अपनी दुर्बलता के कारण तो कभी इस पुरुष सत्तात्मक–व्यवस्था को बनाए रखने के कर्तव्य का निर्वाह करते करते ऐसा आचरण करने लगती है कि जिससे यह स्पष्ट होने लगता है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है। जिससे स्त्रियां स्वयं में ही एक दूसरे के प्रति द्वेष भाव रखने लगती हैं।

समाज ने स्त्री को हमेशा उन्हीं अपराधों की सजा दी जिसकी जिम्मेदार स्त्री स्वयं नहीं रही है–सौंदर्य, शील–भंग और अवैध गर्भधारण या जायज गर्भधारण में भी पुत्री की मां होना। सामाजिक दृष्टि से लड़की की इज्जत और छवि ही उसकी सबसे बड़ी पूंजी और भविष्य की धरोहर मानी गई है। इसीलिए वह इस पर्दे को बनाए रखने के लिए उसी रास्ते पर चलती रहती है। दूसरी ओर, लड़कों के लिए समाज ने ऐसे कोई नियम कायदे या इज्जत के मापदंड नहीं बनाए जिससे उनके आचरण पर भी अंकुश लगाया जा सके। अधिक विस्तार में ना जाकर भारतीय समाज की विवाह– व्यवस्था को ही देख ले। कन्या का दान करना, दहेज लेना, लड़की वालों का हाथ ऊपर होना, विवाहित महिला के लिए मंगलसूत्र, मांग भरने जैसे –सुहाग चिन्हों का निर्धारण आदि सभी रीति–रिवाज लड़की को पुरुष पर अवलंबित तथा मां बाप पर बोझ सिद्ध करते हैं। इन रीति –रिवाजों के कारण शुरू से ही लड़की को अपने ही घर में मेहमान रहने का संस्कार दिया जाता है और यही विवाह व्यवस्था स्त्री की मौत हत्या– आत्महत्या का मूल कारण बनती है।

''यह हमारे समाज की शर्मनाक स्थिति है कि कभी स्त्री को दहेज के नाम पर जला दिया जाता है, कभी पति की मृत्यु के बाद उसे सती हो जाने के लिए मजबूर किया जाता है, कभी उसे भ्रुण में ही समाप्त कर दिया जाता है, ऐसी स्थिति के लिए ''राजेंद्र यादव'' का समाज से यह सवाल है कि ''अपने ही बीच के 1 प्राणी को औरत होने के अपराध का मृत्युदंड आखिर हम कब तक और क्यों देते रहेंगे''

आधुनिक भारतीय समाज में भी ऐसे कई प्रांत हैं जहां पर आज के औद्योगिक युग में भी पति की मृत्यु के पश्चात स्त्रियों को क्षति होने के लिए बाध्य किया जाता है अथवा अपने सम्मान के नाम पर खाप पंचायतों द्वारा किसी स्त्री को सिर्फ अपना जीवनसाथी चुन लेने के नाम पर ही मृत्यु की सजा सुना दी जाती है और पूरे समाज के सामने उसे सूली पर लटका दिया जाता है राजस्थान व पश्चिम बंगाल में सती प्रथा आज भी निरंतर जारी है। बचपन से ही बेटे और बेटी के पालन पोषण में फर्क होता है। जिसका प्रभाव उनके सामाजिकरण पर पड़ता है। लड़कियों को बचपन से ही दबकर रहना सिखाया जाता है। जो धीरे–धीरे उनके स्वभाव में बदल जाता है और आगे चलकर वह जीवन भर स्वयं को पुरुष से हीन समझने को विवश हो जाती हैं।

इस सबंधं में स्त्री चितंक ''कृष्ण कुमार'' का कथन है कि पितृसत्ता की कोई भी व्यवस्था स्त्री की स्वायत्तता के नियमन के बगैर संभव नहीं है और नियमन की व्यवस्था का स्थायित्व इस बात पर निर्भर है कि वह कि तना स्वचालित अर्थात स्त्री के सक्रिय सहयोग से संचालित है आशय स्पष्ट है कि पितृसत्ता को मजबूत बनाए रखने के लिए स्त्री स्वयं तत्पर रहें यही बचपन से लड़की के सामाजिकरण का ध्येय है।''

निष्कर्ष

इस प्रकार देखा जा सकता है कि पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री के लिए कहीं पर भी जगह नहीं छोड़ी है और ना ही उसे अपने मन के अनुसार जीने का अवकाश मिला है एशिया अफ्रीका यूरोप अमेरिका सभी महादेशों की स्त्रियां एक दूसरे की तुलना में चाहे कमतर बेहतर हूं लेकिन अपने अपने समाजों में शूद्रों से भी ज्यादा पाबंदियों में वे रहती आई हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि अन्याय और अत्याचारों से स्त्रियों को बचाने के लिए दो स्तरों पर कार्य होना चाहिए। पहला स्तर है –कानूनी तथा प्रशासनिक उपायों द्वारा अपराधियों को सजा देने की व्यवस्था करना और दूसरा –स्त्रियों को सबल और साहसी बनाने तथा पूरे भारतीय समाज में स्त्री के प्रति भेदभाव का परंपरागत दृष्टिकोण बदलने के लिए आंदोलन चलाना होगा।

क्योंकि जब तक समाज के सदस्यों में, उनके दृष्टि कोण में महिलाओं, स्त्रियों, बालिकाओं के प्रति बदलाव नहीं होगा तब तक किसी भी देश की कोई भी कानून व्यवस्था कि तनी ही प्रभावी क्यों ना हो वहां पर देश की आधी आबादी के खिलाफ अन्याय होना बंद नहीं होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ''तारीख में औरतें''–अशोक पांडे, द्वितीय सस्करण– सभांवना प्रकाशन रेवती कुंज–हापडु पृष्ठ सख्या 5
2. तुलनात्मक राजनीति और शासन रूबी एल फणिया – साहित्य भवन पब्लिकेशन
3. 'उत्तराधिकार बनाम पत्रुआधिकार' सं–अरविदं जैन, स–ं वर्ष 2001, पृष्ठ सख्या 11–12 राजकमल पेपर बैंक प्रकाशन नई दिल्ली
4. 'आदमी की निगाह में औरत' सं.–राजेंद्र यादव, सं .वर्ष 2013, पृ. संख्या 77
5. 'चूड़ी बाजार में लड़की' सं.–कृष्ण कुमार, सं.–वर्ष 2014, पृष्ठ संख्या– 109, राजकमल प्रकाशन– नई दिल्ली।

❖◆❖